।। जयगुरुदेव ।।

जयगुरुदेव नाम से जुड़ें झगड़ा–झंझट खत्म करो

सभी उपस्थित सत्संगी, साधक भाई बहन, बच्चे तथा बच्चियों! गुरु महाराज की मौज दया हुई और आज 8 फरवरी 2018 को सेन्दूरवाफा, महाराष्ट्र में दिन के ढ़ाई बजे आप सब लोगों के दर्शन का अवसर गोष्ठी कार्यक्रम में हुआ। ऊपरी लोकों से जीवात्माऐं इस धरती पर समय–समय पर, वो मालिक भेजता है। जब उनको यहाँ पर गुरु मिल जाते हैं, वो हर चीज को सिखा देते हैं तब फिर वो आदेश उनको मिलता है कि अब इतना काम आपको करना है और इस काम को करके फिर वापस आना है। समय–समय पर इस धर्म धरती पर लोगों के लिए काम करने वाले अवतारी शक्ति, ऋषि–मुनि, सन्त आते रहे हैं। गुरु महाराज भी कुछ समय पहले इस धरती पर आये थे, उनको जो काम, ऊपर से आदेश मिला था, उसको उन्होंने अपने रहते समय तक किया लेकिन उसके साथ ही साथ जो काम उनका अधूरा रह गया था उसकी जिम्मेदारी हमारे–आपके ऊपर डालकर के वो चले गये। हमको आपको उस काम को पूरा करना है।

इस धरती पर जितने भी महापुरुष आए पिछले दिनों में, सबसे ज्यादा ताकतवर, सबसे ज्यादा बुद्धिमान, जीवों को इस काल के देश से छुडाने का प्रयास, उनके अन्दर रहा है क्योंकि इस कलियुग में काल से जीवों को छुड़ाना, सन्तमत की तरफ लाना, दुनियां की तरफ से हटाकर के अपने देश की तरफ मोड़ना, ये बड़ा ही टेढ़ा मामला रहा है। लेकिन गुरु महाराज ने अथक परिश्रम किया। जब से उनको काम मिला, शुरु किया, अपने आखिरी दिनों तक बराबर उस काम में लगे रहे। इसके साथ ही साथ उन्होंने एक ऐसी नींव रख दी कि जिससे काल के चंगुल से जीवों को छूटना ही है। वो क्या है, कलियुग में ही सतयुग को लाना। क्योंकि जब तक खान–पान, चाल–चलन लोगों का सही नहीं होगा, विचार भावनाएं जब तक लोगों की नहीं बदलेगी, जब तक ईर्ष्या–द्वेष, बैर–भाव खत्म नहीं होगा, जब तक नीयत दुरुस्त नहीं होगी, तब तक सतयुग के लायक बन नहीं पाएंगे।

सतयुग को तो समय पर आना ही है, उसके लिये सतयुग के योग्य बनाने की जिम्मेदारी हमारी आपकी बनती है। सतयुग देखने के लायक अगर बन गये तो ये जो आप गुरु महाराज का मिशन लेकर चल रहे हैं, जीवों को अपने घर पहुंचाने का, नर्क चौरासी से छुटकारा दिलाने का, जन्म–मरण की पीड़ा से छुटकारा दिलाने का, वो जल्दी से पूरा हो जाएगा।

अब बीज तो गुरु महाराज ने डाल दिया, डाल करके चले गये लेकिन अगर उसकी सिंचाई–गुड़ाई और रखवाली हम आप नहीं करेंगे तो उसमें फल निकलेगा नहीं। अब ये है कि जब तक आप उनकी बातों को जन–जन तक पहुँचाएंगे नहीं, सतयुग का मतलब बताएंगे नहीं, जीवात्मा, आत्मा, परमात्मा का मतलब बताएंगे नहीं तब तक लोगों को जानकारी नहीं हो पाएंगी, उसके लिए हमको आपको उसी तरह से बनना होगा जैसा गुरु महाराज ने हमको आपको सतसंगों में सुनाया, बताया और समझाया। उनके वचन को अगर याद रखेंगे तो वैसे बनकर के उनके मिशन को पूरा कर सकेंगे और नहीं तो काल भी अपने दांव में, माया भी अपने दांव में, कि जैसे ही ये गुरु के रास्ते से हटें, गुरु उनके मस्तक से उतरें, हम इनको अपने चंगुल में ले लें। गुरु के रास्ते से ये अलग हो जायें, परमार्थ के रास्ते से ये अलग हो जायें। इसलिए जितने भी आप यहाँ पर काफिला यात्री हो, आप लोगों को बड़ी सावधानी बरतनी है, सावधानी से रहना है, खान–पान, चरित्र पर ध्यान देना है। ऐसा आदर्श प्रस्तुत करना है कि आपकी नकल अन्य लोग भी करें। नये लोग इन सब चीजों को देखते हैं, क्या खाता है? कैसे उठता बैठता है? कहां क्या करता है? उसकी वाणी कैसी है? वाणी में कितना दम है? कितनी दृढता है? इन सारी चीजों को दुनिया वाले देखते हैं और फिर वो प्रभावित होते हैं। अब आप इस बात को समझो कि गुरु महाराज के आप इतने लोग, जो यहाँ पर हो इतने ही भक्त नहीं हैं, बहुत से भक्त हैं गुरु महाराज के नामदानी बहुत से हैं पूरे हिन्दुस्तान में जगह–जगह फैले हुए हैं। अब ये है कि ये बातें अगर उन तक भी आप पहुँचाएंगे कि भाई आप कोई ऐसा काम न करो कि जिससे गुरु का नाम खराब हो, अगर आप गुरु भक्त हैं, गुरु से प्रेम करते हैं, गुरु के मिशन को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो ऐसा कोई काम न करो कि जिससे गुरु को अन्य लोग गाली दें। गुरु के नाम को लोग बदनाम करें, ऐसा कोई काम न करो।

प्रेम से सब लोग रह करके और प्रेम के साथ इस मिशन को आगे बढ़ाओ। देखो! कहते हैं कि चार आदमी की लाठी और एक आदमी का बोझा हो जाता है। इसी तरह से एक–एक से अनेक हो जाते हैं। बूंद–बूंद से घड़ा भर जाता है तो इतने लोग होते हुए और गुरु का मिशन में देरी हो रही है, ये बातें लोगों तक पहुँचाने में देर हो रही है, लोगों के सुधरने में देर हो रही है तो बड़ी कमी मानी जाएगी।

आप लोगों ने मेहनत किया। आज 32–33 दिन निकले हुए काफिले को हो रहा है और आप ने देखा कि आप ने जब मेहनत किया, लोगों के अन्दर बहुत ही बदलाव आया, कितने लोगों ने मांस–शराब को छोड़ दिया, कितने लोग भजन करने लग गये तो देर इसी

बात की है कि लोग लोगों तक पहुँच नहीं रहे हैं। कितने लोग होली के कार्यक्रम में आने की तैयारी में लग गये। तो हम तो ये चाहते है कि आप सब लोग तथा देश के जितने भी गुरु महाराज के प्रेमी हैं, जितने भी नामदानी हैं, अब गुरु महाराज के इस आव्हान को, कि कलियुग में कलियुग जाएगा और कलियुग में सतयुग आयेगा, आओ सतयुग तुम्हारा हार्दिक स्वागत है, तो उस स्वागत के लिये लोगों को लग जाना चाहिए। सब लोगों को मतभेद भुलाकर के झगड़ा–झंझट खत्म करके और गुरु महाराज के सतयुग आने के संकल्प को पूरा करने में लग जाना चाहिए। <u>देखो! झगडा झंझट से कोई काम होता नहीं हैं, जो काम आपस में बैठकर के, विचार विमर्श करके, सुलझा लिया जाता है वो काम अच्छा होता है जो सुलझा लेता है, दिल–दिमाग लगाकर के, महान होता है। जो सुलझाने में मदद करता है उसकी भी महान्ता रहती है।</u> झगड़ा–झंझट, मुकदमेबाजी से कोई काम बनता नहीं है बल्कि और पिछ्डता है।

गुरु महाराज को गये हुए 5–6 साल हो रहे हैं और अभी तक देखो गुरु के नाम को बढ़ाने में, गुरु का काम करने में कोई प्रगति उन लोगों की दिखाई नहीं पड़ रही है कि जो अपने को गुरु भक्त कहते हैं <u>इसलिए हम ये चाहते हैं कि झगड़ा–झंझट अब सब लोगों को मिल करके खत्म कर देना चाहिए, खत्म करा देना चाहिए</u> और गुरु महाराज के मिशन को आगे बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए। परिस्थितियां आती हैं चार लोग जहां पर रहते हैं वहाँ पर मतभेद होता है विचारों में खिन्नता आती है, लेकिन कहा गया कि सुबह का भूला हुआ शाम को घर अगर वापस आ जाये तो भूला नहीं कहलाता है। इसलिए अब तक जो हुआ सो तो हुआ, गुरु का नाम जो बदनाम हुआ <u>सो तो हुआ लेकिन अब देश के संगत के जिम्मेदारों को संतसगी पुराने नये को यानि सब को मिलकर के उस बदनामी से बचाने की जरूरत है।</u>

देखो प्रेमियों! गुरु महाराज ने कहा था, <u>हमारे लिये</u>, ये आप सब लोगों को, देश के संगत के बहुत से लोगों को, यह जानकारी है कि <u>ये नये लोगों को नामदान देंगे और पुराने लोगों की ये सम्भाल करेंगे तो हमारा ये फर्ज बनता है कि सब लोगों को बता दें,</u> समझा दें कि वक्त निकल जाने पर बाद में सोचना ही पड़ता है और समय किसी का इन्तजार करता नहीं। समय निकलता चला जा रहा है और बाद में समय से काम न करने से नुकसान ही होता है इसलिये थोड़ा सा अभी समय है <u>सोचने का, समझने का, झगडा–झंझट खत्म करने का, मुकदमेबाजी दूर करने का</u> अभी समय है। हम तो अपने काम में लगे हुए हैं, गुरु महाराज की दया तो हमारे ऊपर बराबर है और हम यही प्रार्थना करते रहते हैं कि हमारे ऊपर आप

दया बनाते रहिये और जो आप आदेश दिये हैं उसका पालन हम बराबर, जब तक ये शरीर चले, तब तक करते रहें तो हमारा काम तो चल रहा है लेकिन हम जो गुरु महाराज से जुड़े हुए अपने गुरु भाई, प्रेमी भाई–बहन हैं, उनके लिये हमारा ये फर्ज बनता कि हम उनको समझावें–बतावें कि सब लोगों को मिल करके और विचार करना चाहिये और समझ करके जयगुरुदेव नाम से जितने भी झगड़े–झंझट है उनको सबको खत्म कर देना चाहिए। आपस में बैठेंगे, विचार विमर्श करेंगे, चार आदमी जिस बात को कहेंगे ऐसा कुछ नहीं कि एक आदमी बात को न माने उसको मानना ही पड़ेगा। झगड़ा–झंझट, तीर–तलवार से गुरु का नाम बदनाम होगा इस लिए आपस में विचार विमर्श करके, समस्याएं सुलझा लेनी चाहिए।

गुरु महाराज ने कितना मेहनत किया, संगत को चलाने के लिए। गुरु महाराज के एक गुरु भाई ने बताया, बुजुर्ग ने गुरु महाराज के बारे में कहा कि गुरु महाराज कानपुर स्टेशन पर, बाहर पेन बेच रहे थे तो जब उनको मिले तो उन्होंनें कहा कि भाई साहब आप ये क्या कर रहे हो ? तो बोले गुरु महाराज का भण्डारा आ रहा है। तो मैंने ये सोचा कि कुछ पैसे मिल जाएंगे तो भण्डारा ठीक से हो जायेगा। अब आप ये सोचो कि किस तरह से को नंगा भूखा रह करके और मेहनत करके उन्होंने इस मिशन को चलाया और किस तरह से जीवों के लिये सुख–सुविधा, रहने के लिये और उनके लिये जगह और उनके लिये जो इन्तजाम जगह–जगह पर किया। मथुरा में एक बहुत बड़ा आश्रम बनाया और आप बहुत से लोग वहां आते–जाते भी रहे और वो आश्रम आज भी वहां पर विद्यमान है। तो कितनी मेहनत किया, हमने भी मेहनत किया वहाँ पर लेकिन जब देखा कि नाम खराब हो जायेगा, कोई नामलेवा नहीं रह जायेगा, जयगुरुदेव नाम पर लोग गालियां देने लग जाएंगे तो फिर मैं वहां से हट गया। अब भी हम को उस जगह से प्रेम है। ऐसा नहीं कि प्रेम नहीं है या वहां पर जो प्रेमी आश्रम पर रहते हैं। क्या उनसे प्रेम नहीं है ? उनसे भी प्रेम है, आस–पास की जनता से भी प्रेम है लेकिन झगड़ा–झंझट की वजह से ही मैं वहाँ पर जाता नहीं हूँ कि जिससे कोई बात बढ़े, झझड़ा–झंझट बढ़े, इसलिए जाता नहीं हूँ। इच्छा तो पूरी है मेरी, कि वहां पर मैं गुरु के लिए कुछ करुँ, गुरु का नाम वहाँ से आगे बढाऊँ उस जगह को और भी ज्यादा प्रसिद्धि दिलाऊँ लेकिन खून बहाकर के नहीं, बल्कि पसीना बहाकर। अब अगर देश की संगत इस बात को चाहती है कि वहां से गुरु का नाम आगे बढ़े और गुरु का वो स्थान साफ सुथरा और उसी तरह का हो जैसा पहले था जैसे लोग वहां जाते थे लोगों को फायदा (लाभ) मिलता था, शान्ति मिलती थी। उस तरह की अगर बने तो सब लोगों को मिलजुल करके, बैठ करके समस्याओं को सुलझा लेना चाहिए मुकदमे बाजी और इन चीजों

को खत्म कर देना चाहिए। किसके नाम पर ? गुरु के नाम पर, गुरु के मिशन के नाम पर, गुरु भक्ति के नाम पर सब लोगों को मिलकर के झगड़ा–झंझट दूर कर देना चाहिए। एक आर्दश प्रस्तुत कर देना चाहिए संतमत का, कि भाई सन्त मत में कोई विवाद झझड़ा–झंझट नहीं होता है। प्रेमियों ने, अगर आप लोगों ने, सब लोगों ने मिलकर ये काम कर लिया तो पीछे के जितने भी सन्त आये संतमत के, उनके इतिहास में आपका नाम आगे हो जायेगा। इसलिए प्रयास करने में कोई दिक्कत परेशानी नहीं है। प्रयास अपने–अपने स्तर से सब लोग करने लगेंगे। शान्ति पूर्ण ढंग से, तरीके से रास्ता निकल आयेगा, निराश होने की जरूरत नहीं है।

देखो! प्रेमियों आप लोगों ने मेहनत किया, गुरु भक्ति आपके अन्दर है, गुरु भक्ति अगर ना होती तो गुरु के नाम पर 41 दिनों के लिए आप अपने साधन सुविधा से काफिले में निकल न पाते और अब की बार मैंने यह देखा कि प्रेमियों ने मेहनत किया। मेहनत अपनी औकात से ज्यादा किया और उसमें सफलता भी मिली। अब यह जरूर रहा, भाषा का लोगों के ऊपर असर रहा। आप हिन्दी भाषी रहे उधर की भाषाएं अलग रहीं। महाराष्ट्र की भाषा मराठी और कर्नाटक की कन्नड़ और तमिलनाडु की तमिल भाषा और उधर तेलगू आन्ध्रा की, तो भाषाएं तो अलग रही लेकिन भाषा विपरीत होने के बावजूद भी आप के दिल की भावनाओं को लोगों ने समझा और समझ करके दिल से दिल मिलाया तो काम तो बहुत हुआ। अब यह है कि इधर यह कल से हिन्दी भाषी प्रदेश यह आपका छत्तीसगढ़ आने जा रहा है। प्रेमियों कुछ दिन पहले गोष्ठी काफिले में हुई थी तो मैंने कहा था कोटा पूरा करो। कोटा आपको दिया गया था, अब यहां बराबर कोटा आपको पूरा करने का मौका मिलेगा जीवों को जगाने का, जीवों को नामदान दिलाने का, उनको सुमिरन–ध्यान–भजन समझाने का, उनको बैठाने का और भी संगत का काम है उसको करने का, आपको खुले दिल से मौका मिलेगा। तो इसमें आप सब लोग अपने आखिरी दिनों में ताकत लगा देना कि ज्यादा से ज्यादा जीव फायदा (लाभ) उठा लें।

दूसरी चीज यह है कि जब सफलता मिलने लगती है तो जिसके घर में से किसी को निकालना होता है उसको तकलीफ होती है। काल का घर, काल का देश और काल के इस देश में काल के जीव जो बन गये उनमें से जीवों को निकालना, वो उसके लिए दुखदायी होता है। इसलिए तो बाधा बहुत डालता है। बहुत ही आखिरी दिनों में संभलने की, संभल कर चलने की जरूरत है। अपनी सुरक्षा से लेकर के और लोगों की सुरक्षा का ध्यान हर तरह का रखना है। शरीर की सुरक्षा और आपकी जिससे रोटी पानी चलती है सब सामान

की सुरक्षा का बड़ा ध्यान रखना है। जो लोग गाड़ियों को चलाते हैं, बड़ी सावधानी से चलाएंगे, हमेशा होशियार रहेंगे। गाड़ी चलाने वाले का दिल–दिमाग आँख–कान, हाथ–पैर, बहुत ही एक्टिव होना चाहिए तो हमेशा ध्यान रखना है। लापरवाही तनिक सी भी अगर हो जाती है तो चलाने वाले का और साथ में बैठने वाले का, दोनों की जान का खतरा पैदा हो जाता है। इसलिए हमेशा अलर्ट रहना है, हमेशा सजग रहना है।

अब आगे बात समझो, ध्यान–भजन भी प्रेमी करते हैं उससे भी संतुष्टि है। जो लोग नहीं भी करते थे वो भी करने लग गये, जो लड़के कभी माला नहीं उठाये थे वो भी माला करना सीख गये। कुछ बच्चों की ड्यूटी वहाँ पर समझाने में लगा दी गई उनके लिए भी मजबूरियां हो गई सीखने की। इसी तरह से आप लोगों को यहां से जाने के बाद अपने बच्चों को भी संगत में लगाने की जरूरत है। बच्चों को एक जगह पर यदि आप बैठा दो तो जल्दी बैठना पसंद नहीं करते हैं। लेकिन कोई काम बता दो तो दौड़–दौड़ कर करते हैं। संगत के काम में जब आप लगाओगे तो वो माला भी पकड़ लेंगे, भजन–ध्यान भी करने लग जाएंगे इसलिए बच्चों को लगाने की जरूरत है। देखो! गुरु महाराज नें एक बार कहा था कि एक–एक बच्चा आप लोग हमको दे दो तो हम आपका सारा काम करके दिखा देंगे। उनकी बातों पर कुछ लोगों ने तो ध्यान दिया और उन बच्चों को दे दिया वो लोग अब काम कर रहे हैं। अब बच्चे ही नहीं वे बूढ़े होने जा रहे हैं जिनको उनके माता–पिता ने संगत में दिया था। लेकिन सब लोगों ने इस चीज का ध्यान नहीं रखा। इसलिए उनके मिशन के पूरा होने में देरी हो रही है। अगर गुरु महाराज की कही हुई बात को प्रेमी पकड़ लेते और लोगों को लगा देते तो आज आपको इतनी मेहनत न करनी पड़ती और इस धरती पर ही सतयुग का नजारा दिखाई पड़ता।

नानक साहब जा रहे थे। कहाँ ? इधर राजस्थान में। तो एक उनके भक्त थे डल्ला। कोई जरूरी नहीं होता है कि जो संतों के नजदीक रहता है वो पूरा ही भक्त होता है। कुछ लोग ऐसे भी आगे पीछे लगे रहते हैं उनमें से ही होते हैं। गुरुमुख अलग होता है, मनमुख अलग होता है। मनमुख अपने मन के अनुसार चलता है। जो गुरु का कहना सुनता है वह गुरु मुख होता है, गुरु की मौज और गुरु के आदेश में चला करता है। तो डल्ला थे। तो डल्ला से उन्होंने कहा कि देखो कितने बढ़िया आम लगे हुए हैं और वो पेड़ किसका था अकवा। अकवा के बड़े–बड़े पेड़ थे उस में फल लगा हुआ था नानक जी ने कहा देखो कितने आम बढ़िया लगे हुए हैं। अरे बोले आम नहीं है, ये तो अकवा के पेड़ हैं। बोले कह दे आम के हैं तो कहा के ये कह दे आम के हैं अरे तू कह दे आम के हैं अरे बोले ऐसे कैसे

कह दें आम के हैं। बोले अच्छा। थोड़ी दूर और आगे गये तो घास लगी हुई थी तो बोले देख कितना बढ़िया गेहूँ लगा हुआ है तो कहे गेहूँ नहीं है कैसे कह दें आप जो कह रहे है। उसी को कह दे कि गेहूँ है। तो बोले कह दे। तो बोले कि कैसे कह दें ? डल्ला जब वहाँ पहुँचे तो फिर कहे बताओ। यानि वही गुरु का मजाक करने लग गये कि कैसे अब कह दें, उसको कह रहे थे अकवा के फल को कि आम है कह दे आम है तो कोई भक्त था उसी में से कोई गुरु मुख बोला अरे तूने देर कर दिया, बहुत देर कर दिया। तुझको तो कह देना चाहिए कि आम है तो आम ही वहां होने लग जाता। तू कह देता कि गेहूँ है तो गेहूँ की पैदावार वहाँ शुरू हो जाती। अब तो होगा तो जरूर महात्मा की कोई भी बात, सन्त की कोई बात खाली नहीं जाती है, होती जरूर है लेकिन समय से। प्रेमी उसको समझ नहीं पाते, कह और कर नहीं पाते हैं तो उसमें देर लग जाती है तो होगा तो जरूर।

आवाज तो उन्होंने लगाया कि कलयुग में कलयुग जायेगा और कलयुग में सतयुग आयेगा। वो तो आयेगा ही लेकिन अब जितने भी युग परिवर्तन हुए, सब में देखो बहुत लोग मरे। कुछ जानकारी में भी मरते हैं कुछ गैरजानकारी में। बहुत से लोगों को ये ही नहीं पता कि मांस–मछली नहीं खाना चाहिए, अण्डा नहीं खाना चाहिए, शराब नहीं पीना चाहिए। अब मान लो अगर कोई बीमारी ऐसी फैल गई जो मांसाहारियों को हुई तो उसमें जान–अनजान वाले दोनों जाएंगे। कहते हैं गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है। ऐसे ही नुकसान लोगों का हो जाएगा। फिर ये जिस्मानी मन्दिर बेकार चला जायेगा जो इबादत भजन के लिए मालिक ने दिया है। इसलिए उनको बचाने की जरूरत है। परिवर्तन होने में तो देर नहीं लगती है। परिवर्तन तो ऐसे (चुटकी बजाते हुए) हो सकता है लेकिन जन–धन हानि होगी। उसको बचाना है, उसको बचाने के लिए आप सब लोग अपने हाथ पैर दिल दिमाग से लगिए, विचार–भावनाओं को लगाइए, जो भी गुरु महाराज ने आपको अक्ल, बुद्धि, धन दिया है उसका उपयोग इसमें करिये।

बोलिये जयगुरुदेव।